E-content for student of Patliputra University Patna

Course- BA honours part III

subject Hindi paper 6,unite-1

Topics-काव्य प्रयोजन क्या है? आधुनिक समय में इसकी उपयोगिता पर विचार कीजिए।

-डॉ०प्रफुल्ल कुमार एसोसिएट प्रोफेसर अध्यक्ष-हिन्दी विभाग आर आर एस कॉलेज मोकामा पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय पटना

काव्य की प्रसार सीमा के एक छोर पर उत्पादक रहता है और दूसरे पर पाठक । अतः काव्य के प्रयोजन पर इन्हीं दोनों की दृष्टि से विचार किया जा सकता है। इस आधार पर प्रयोजन भी भिन्न-भिन्न होते हैं। उत्पादक की दृष्टि से इसका मुख्य प्रयोजन यश या तृप्ति का लाभ है और गौण है अर्थ या काव्य का लाभ ।उत्पादक को जो यश का लाभ होता है वह उसके जीवन तक ही नहीं बल्कि युग -युगांतर तक चलता है ।कवि का स्थूल शरीर नष्ट हो जाता है और उसका

जरा- मरण रहित यश शरीर अमर रहता है। "**जयन्ति तेसुकृतिनो**

रससिहा कवीश्वरा

नास्ति येषां यश:काये

जरामरणं नंभयम् ।"

कम से कम जब तक उस साहित्य का, उस भाषा का, उस जाति का लोप नहीं हो जाता तब तक वह कवि अवश्य जीता रहता है ।तृप्ति की प्राप्ति से उत्पादक पूर्ण काम हो जाता है ।कवियों ने स्वत: ऐसा कहा है। महाकवि तुलसीदास जी लिखते हैं - **"स्वान्त: सुखाय तुलसी रघुनाथ गाथा/भाषा निबद्धमति मञ्जूलमाप्नोति"।** अर्थ लाभ की अनेक कथाएं भी प्रसिद्ध है। हिंदी के कवि भिखारी दास ने अपने काव्य निर्णय में एक अच्छा उदाहरण दिया है।-

"एकै लहै तप पुण्यन के फल ज्यों तुलसी अरू सूर गोसाईं। एकै लहै बहु संपति केशव, भूषण ज्यों बलवीर बड़ाई ।एकन कौ बहू संपति, एकन कौ जसहिं सो

प्रयोजन है। रसखानी रहीम की नाई, दास कवितन की चर्चा, बुद्धिवन्तन कौ सुखदय सब ठाईं।।“

ग्राहक अर्थात् पाठक श्रोता या दर्शक की दृष्टि से काव्य का प्रधान प्रयोजन है आनंद की अनुभूति या रसमग्नता तथा गौण है संकेत प्राप्त व्यावहारिक ज्ञान जिसे शास्त्र का कांता समित उपदेश कहते हैं। इसी को आचार्य मम्मट ने इस प्रकार व्यक्त किया है-**“काव्य: यशसे अर्थ कृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये** समित **।सद्य: परिनिवृत्ते कांता समिततयो उपदेश यूजे।**” समित या रीति तीन प्रकार की मानी गयी है- प्रभु समित,सुहृदं समित, कांता समित। प्रभु समित का अर्थ स्वामी की भाँति हुआ। जिस प्रकार स्वामी सेवकों को किसी कार्य को करने या न करने की आज्ञा देता है ,उसी प्रकार जो रचना विधि और निषेध का ही विधान करने वाली है। उसे प्रभु समित उपदेश दात्री कहेंगे ।ऐसी रीति से उपदेश देने वाली वेद और शास्त्र हैं। सुहृद समित का अर्थ मित्र की भांति है। मित्र उपदेश देते समय अत्यंत समाझा बुझा कर अनेक उदाहरण और दृष्टांत देकर काम निकालता है ।इसी

प्रकार जो रचना उदाहरण और दृष्टांत द्वारा विषय का स्पष्टीकरण करती है, वह सुहृद समित उपदेश देने वाली कही जाती है। इतिहास ग्रंथ ऐसे ही होते हैं, जैसे महाभारत। कांता उपदेश या कार्य ज्ञापन विधि निषेध या दृष्टांत मुख से सीधे नहीं कहती वक्रता से केवल इंगित करती है।आवश्यक वस्तु का केवल संकेत कर देती है। इसी प्रकार जो रचना संकेत द्वारा साध्य का ज्ञान कराती है उसे कांता समितउपदेश देने वाली रचना कहते हैं। इस प्रकार की रचना है जो स्पष्ट कुछ नहीं आता है अपना अभिप्रेत संकेत द्वारा व्यक्त करता है ।ऐसे तुलसी का रामचरितमानस ।इसका साध्य यह है कि राम की भांति लोक का उपचार करना चाहिए रावण की भांति आचरण नहीं करना चाहिए ।ऐसा करने से कई बातें स्पष्ट हो जाती हैं। पहली तो यह कि काव्य का तथा वेद शास्त्र पुराण इतिहास आदि का लक्ष्य एक ही है। केवल प्रस्थान भेद है। कोई किसी मार्ग से और कोई किसी मार्ग से वहाँ पहुँचता है ।दूसरी बात यह कि वेद शास्त्र आदि का प्रभाव भले ही किसी पर न पड़े पर काव्य का प्रभाव पड़ता है ।कारण यह कि काव्य हृदय

की भाव पद्धति पर चलता है तथा अन्य रचनाएं तर्क पद्धति पर ।भाव पद्धति का प्रभाव अधिक होता है, तर्क का बहुत कम या कभी-कभी बिल्कुल नहीं ।तीसरी बात यह कि काव्य में उपदेश सांकेतिक रूप में ही रहता है इसलिए उपदेश का नाम सुनकर भड़कना नहीं चाहिए। काव्य के मनोरंजन में उपदेश इस तरह घुला मिला रहता है कि हम बिना उस पर विचार किए ही उसे ग्रहण कर लेते हैं। अतः हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि काव्य का प्रयोजन यश, अर्थ, व्यवहार ज्ञान ,लोकोत्तर आनंद और सरस मधुर उपदेश देना है। आचार्य मम्मट ने अमंगल निवृत्ति के भी कुछ उदाहरण दिए हैं जो सार्थक हैं। कवि की दृष्टि से यश और अर्थ तथा पाठक या प्रेक्षक की दृष्टि से व्यवहार ज्ञान और उपदेश काव्य का प्रयोजन है तो मंगल निवृत्ति और लोकोत्तर आनंद पाठक और कवि दोनों की दृष्टि से है।*

****